आचार्यश्रीतुलसी ने ज्यादा समय सत्य की खोज में लगाया

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 12 अप्रैल।

तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवासमवसरण में धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यप्रवर ने आचार्यश्री तुलसी की पुण्य तिथि पर उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए फरमाया की वाणी के द्वारा जो प्रकंपन्न निकलते हैं वे बहुत दूर तक पहुंच जाते हैं। वक्ता यदि तेज स्वर में बोलता है तो उसकी वाणी के प्रकंपन्न या वाणी के पुद्गल लोकांत तक भी जाते हैं और कमजोर बोलता है तो बीच में स्खलित हो जाते हैं। हम भी वैसी शक्ति पैदा करें। आचार्य तुलसी की स्मृति करने के साथ–साथ उनसे यह याचना कहें कि हम अपनी वाणी के प्रकंपन्न उन तक पहुंचा दें जिसे हम सुनाना चाहते हैं।

आचार्यप्रवर ने आचार्यश्री तुलसी के संस्मरणों की व्याख्या करते हुए फरमाया कि आचार्य तुलसी ने बहुत समय सत्य की खोज में लगाया। उनका मनोबल बहुत विचित्र था। सत्य के साथ निरंतर चलते थे। वे नियम के बहुत पक्के थे, रूढ़ भाषा में नहीं सोचते पर सत्य के साथ–साथ निरंतर चलते। इतना कुछ नया खोजा और नया धार्मिक जगत के लिए एक आश्चर्य बना हुआ है। आज भी जो उनकी देन हमारे लिए बहुत काम की बन रही है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने विदेशों से पत्रों आदि के माध्यम से आने वाले संवादों को व्याख्यायित करते हुए कहा कि अहिंसा के प्रशिक्षण की पहली बार एक पुस्तक जब विदेशी लोगों के पास पहुंची तो वे कहते हैं कि हम पहली बार नई बात जान रहे हैं। हम बीस–तीस वर्ष से इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं, पर ये बातें हमारे सामने कभी नहीं आई। अहिंसा प्रशिक्षण के बारे में एक अहिंसा का सिद्धांत है और दूसरा प्रशिक्षण 'ट्रेनिंग और रिसर्च' आज के युग में बहुत आवश्यक है। अनुसंधान, खोज बहुत महत्त्व के होते हैं।

आज आचार्य तुलसी की पुण्यतिथि है मैं कहना पसंद करूंगा कि केवल तेरापंथ को ही नहीं जैन शासन को ही नहीं पूरे धर्मजगत को एक नया मोड़ इस वैज्ञानिक युग में जी सकें ऐसा मोड़ किसी ने दिया है तो वह आचार्य तुलसी ने दिया। आज भी सब लोग समझ नहीं पा रहे हैं। उनकी क्रांत वाणी को समझ नहीं पा रहे हैं उन्होंने जो प्रहार किया और जड़ की बात को पकड़ा कि नैतिकता के बिना धर्म की आराधना नहीं हो सकती। इस सच्चाई को पकड़ा पर उस पर जो कार्य किया है बहुत विचित्र काम किया और उसके साथ–साथ अनेक नई बातों की खोज की है।

इन शताब्दियों के साथ साहित्य को देखें कि किस आचार्य ने यह बात लिखी हो कि आत्मशुद्धि का जहां प्रश्न है संप्रदाय का मोह न हो।' जो बहुत दुर्लभ बात है।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने आचार्य तुलसी के संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए अपने प्रवचन में कहा कि आचार्य तुलसी ने विभिन्न दिशाओं में काम किया उन्होंने मानव जाति के

उत्थान के लिए बहुत कार्य किया। आचार्य तुलसी के जीवन में अनेक संघर्ष आए, वे कहते थे कि मुझे सम्मान भी बहुत मिला तो दूसरी ओर संघर्ष भी बहुत सहन किया। इसी तरह आदमी के जीवन में विरोध आ सकते है। सम्मान हो सकता है तो कभी अपमान को भी सहन करना पड़ सकता है मनुष्य के लिए जरूरी है कि अनुकूल प्रतिकूल परिस्थिति में सम रहने का प्रयास करे। जीवन में कभी लाभ कभी अलाभ, कभी सुख कभी दुख आते रहते हैं।

इससे पूर्व मुनिश्री राजकुमार ने गीत संगान किया। इस अवसर पर राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जी.एल. नाहर ने 'अणुव्रत' अप्रेल माह का द्वितीय अंक आचार्यश्री महाप्रज्ञ को भेंट किया।

चुनावशुद्धि अभियान जागृति यात्रा

बीदासर, 12 अप्रैल।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के निर्देशानुसार एवं अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के अनुपालन में राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जी.एल. नाहर के नेतृत्व में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के तहत कस्बे में अणुव्रत चुनाव रथ मुख्य मार्गों से चलते हुए प्रचासर–प्रसार किया। चुरू जिला अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चौथमल बोथरा ने बताया कि लोकसभा चुनाव में जिले भर में अणुव्रत चुनाव रथ घुमाकर लोगों को जागरूक करने का अभियान शुरू किया गया है। इस रथ यात्रा में मतदाताओं को जागरूक करने, भय और प्रलोभन में आकर मत न करने, स्वच्छ छवि एवं सेवाभावी उम्मीदवार को मतदान करने की अपील की जा रही है।

सोमवार को युवाचार्यश्री महाश्रमण श्रीरामकृषण गौशाला में

बीदासर, 12 अप्रैल।

कस्बे के दड़िबावासियों के विशेष अनुरोध पर श्रीरामकृष्ण गौशाला में सोमवार को प्रातः 9 बजे युवाचार्यप्रवर धर्मसभा को संबोधित करेंगे।

– अशोक सियोल